SET – 3

समूह – अ

बहुवैकल्पिक उत्तरों मे से सही उत्तर चुनें:-

1) 'तू जिन्दा है' तो कविता के कवि हैं-

क. अरूण कमल ख. बिहारी ग. मो0 इकबाल घ. शंकर शैलेन्द्र

2. हमारे कारवां को .... का इंतजार है।

क. सफल ख. मंजिलो ग. आंधियों का घ. बिजलियों

3. 'सितम' का पर्यायवाची है:-

क. सपना ख. जुल्म ग. काफिला घ. जमीन

4. 'उदय' का विपरीतार्थक है-

क. उत्तम ख. अस्त ग. अंचल घ. अपमान

5. 'अगर-मगर करना' मुहावरे का अर्थ है:-

क. बहुत प्यारा होना ख. सांत्वना देना ग. आदर करना घ. टाल-मटोल करना

6. हामिद के पिता की मौत हुई थी:-

क. कैंसर से ख. हैजे से ग. भूख से घ. चोट लगने से

7. 'महमूद' किस कहानी का पात्र है?

क. ठेस ख. खेमा ग. ईदगाह घ. इनमें से किसी का नहीं

8. चिलाचिलाती धूप को जो .... देवें बना।

क. पानी ख. चाँदनी ग. नरम घ. आग

9. 'बाधा' का अर्थ होता है-

क. रूकावट ख. दौलत ग. प्रयास घ. चमकीला

10. 'आरंभ' का विपरीतार्थक शब्द है-

क. बुरा ख. वीर ग. अंत घ. कायर

11. लेखक बालगेबिन भगत के .... पर मुग्ध था।

क. कर्मठता पर ख. त्याग पर ग. मधुर गान पर घ. ईमानदारी

12. 'वह गृहस्थ थे लेकिन उनकी सब चीज साहब की थी' किस पाठ की पंक्ति है?

क. ठेस ख. ईदगाह ग. बालगोविन भगत घ. खेमा

13. बालगोविन भगत की साधना का चरम उत्कर्ष किस दिन देख गया?

क. जब वो प्रभाती गा रहे थे। ख. जिस दिन उनका बेटा मरा

ग. कातिक में घ. आषाढ़ में

14. बालगेविन भगत प्रत्येक वर्ष कहाँ जाते थे?

क. तीर्थयात्रा पर ख. कबीर मठ ग. गंगा स्नान के लिए घ. कहीं नहीं

15 बालगेबिन भगत के गाँव से गंगा कितनी दूरी पर थी?

क. तीस कोस ख. चालीस कोस ग. दस कोस घ. बीस कोस

16. 'साध्य' की पवित्रता एवं महत्ता तभी है जब उसका साधन भी महान हो। कहा थाः-

क. जवाहरलाल नेहरू ने ख. महात्मा गाँधी ने ग. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने घ. सुभाष चंद्र बोस ने

17. आग बबूला होना का अर्थ हैः-

क. गस्से से भर जाना ख. चापलूसी करना ग. धोखा देना घ. तैयार होना

18. 'पहाड़ पर पानी की यह अजीब लीला है जिसका मुकाबला न रामलीला करे न रासलीला' किस पाठ की पंक्ति हैं?

क. ईदगाह ख. ठेस ग. खेमा घ. हंडरू का जलप्रपात

19. 'विलीन' का अर्थ हैः-

क. लक्ष्य ख. लुप्त हो जाना ग. बगीचा घ. खिला हुआ

20. बिहारी किस काल के कवि हैं ?

क. रीति काल ख. भक्ति काल ग. आधुनिक काल घ. आदिकाल

21. कनक का अर्थ हैः-

क. सोना ख. चाँदी ग. लोहा घ. पीतल

22. मानू किसकी छोटी बहन थी ?

क. सिरचन की ख.मँझली भाभीग.लेखककी घ.इनमें से किसी की नहीं

23.लेखक की माँ ने कामकेबदले सिरचन को क्या देने का वादा किया था?

क. पाँच रूपए ख. पाँच किलो अनाज ग. भरपेट खाना घ. मोहर छाप वाली धोती

24. सिरचन को पान किसने खिलाया ?

क. मानू ने ख. लेखक ने ग. लेखक की माँ ने घ. मंझली भाभी ने

25. गाँव भर मे सिरचन की कदर कहाँ होती थी ?

क. अपने घर में ख. लेखक की हवेली में ग. सबके घर में घ. कहीं नहीं

26. स्टेशन पर सिरचन किससे मिलने आया था ?

क.लेखक से ख. मानू से ग. लेखक की चाची से घ. लेखक की माँ से

27''जिन्दगी हो मेरे परवाने की सूरतयारब''पंक्ति किस पाठ से ली गई है?

क. पीपल ख. बिहारी के दोहे ग. सुदामा चरित घ. बच्चे की दुआ

28. 'अशोक का शस्त्र-त्याग' पाठ है :-

क. कहानी ख. नाटक ग. एकांकी घ. निबंध

29. मगध और कलिंग में कितने वर्षो से युद्ध हो रहा था ?

क. एक वर्ष . ख. दो वर्ष ग. तीन वर्ष घ. चार वर्ष

30. अशोक कहाँ के सम्राट थे ?

क. मगध ख. कलिंग ग.दोनों का घ. इनमें से किसी का नहीं

31. रामधारी सिंह दिनकर कहाँ के रहने वाले थे।

क. बिहार के ख. प0 बंगाल के ग. उतर प्रदेश के घ. राजस्थान के

32. वकील साहब किससे जलते है ?

क. डॉक्टर से ख. बीमा एजेंट से ग. लेखक से घ. किसी से नहीं

33. वकील साहब की पत्नी कैसी थी ?

क. कोधी खा. आलसी ग. मृदुभाषिणी घ. सुंदर

34 'स्पर्धा' का पर्यायवाची है:-

क. प्रतियोगिता ख. आधा ग. तंग घ. फैलाव

35. लेखक ने ईर्ष्या से बचने का क्या उपाय बताया है ?क. मानसिक अनुशासन ख. व्यायाम करना ग. सत्य बोलना घ. इनमे से कोई नहीं

36. 'मोको कहाँ ढूंढे बंदे' पंक्ति किस पाठ से ली गई है ?

क. पीपल ख. बिहारी के दोहे ग. कबीर के पद घ. सुदामा चरित

37 कबीर किस काल के कवि थे ?

क. आदिकाल ख. भक्ति काल ग. रीतिकाल घ. आधुनिक काल

38. विक्रमशिला विश्वविद्यालय किस काल की शिक्षा का केन्द्र था ?

क. वैदिक कालीन ख. जैनकालीन शिक्षा ग. बौद्ध कालीन शिक्षा घ. इनमें से कोई नहीं

39 विक्रमशिला के प्रांगण में कितने महाविद्यालय थे ?

क. तीन ख. चार ग. छः घ. आठ

40 विक्रमशिला विश्वविद्यालय के प्रथम आचार्य कुलपति थें:-

क. सोनभद्र ख. वीरभद्र ग. हरिभद्र घ. कृष्णभद्र

41. पुरातात्विक खनन से प्राप्त बुद्ध प्रतिमा किस मुद्रा में है ?

क. शयन मुद्रा ख. ध्यान मुद्रा ग. भूमि स्पर्श मुद्रा घ. इनमे से कोई नहीं

42. विक्रमशिला का सर्वनाश किस कारण हुआ ?

क. भूकंप के कारण ख. बाढ़ के कारण ग. तुर्को के आक्रमण के कारण घ.इनमें से किसी के कारण नहीं

43. विक्रमशिला का सर्वनाश किस सदी में हुआ ?

क. ग्यारहवी ख. बारहवीं ग. तेरहवीं घ. चौदहवीं

44 डायरी लिखने के लिए संजू का हौसला किसने बढ़ाया ?

क. माताजी ने ख. पिताजी ने ग. दीदी ने घ. दादी ने

45.' स्वादिष्ट' का अर्थ होता है-

क. रुचिकर   ख. सजाना   ग. चमत्कार   घ. सुगंध

46. 'युग- युग से जग मे अचल अटल' किस पाठ की पंक्ति है ?

क. पीपल   ख. झाँसी की रानी   ग. कर्मवीर   घ. सुदामा चरित

47. 'आँसू पोंछना' मुहावरे का अर्थ है-

क.सांत्वना देना ख.आत्मनिर्भर होना ग.क्रोध को बढ़ाना घ.बुरा भला कहना

48. 'सुपुत्र' में कौन-सा उपसर्ग है ?

क. सु   ख. सू   ग. सम्   घ. सत्

49. 'एकता' का विपरीतार्थक शब्द है-

क. प्रत्येक   ख. अनेकता   ग. सच्चा   घ. तीव्र

50. 'पुष्प' का पर्यायवाची है-

क. सुमन   ख. गगन   ग. पतन   घ. अमन

समूह -ब

1) निम्न मे किसी एक विषय पर 250-300 शब्दों में निबंध लिखें :- 1x10=10

1 रक्षाबंधन
2 स्वतंत्रता दिवस
3 विद्यार्थी और अनुसासन
4 पंडित जवाहर लाल नेहरू
5 कम्प्यूटर : आज की आवश्यकता

2. राजगीर भ्रमण की चर्चा करते हुए अपनी दीदी के पास एक पत्र लिखें। 1x05=05

अथवा

अमन ने अपना गृहकार्य नहीं किया है वह आर्यन से कॉपी लेकर अपना काम पूरा करना चाहता है। दोनों के बीच के संवाद को लिखें।

3. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखेः- 2x05=10

प्राचीन भारत के इतिहास की ओर रुख करें तो नारियों की गौरवमयी गाथाओं से इतिहास भरा पड़ा है। शास्त्रों का कथन है-"यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता" यहाँ पूजा का अर्थ उनकी मान-मर्यादा और अधिकारों की रक्षा करने से है। प्राचीन काल मे उन्हें लक्ष्मी व गृहदेवी के नाम से संबोधित किया जाता था। पुरुष के समान शिक्षा मिलती थी। बड़े धार्मिक अनुष्ठान उनके बिना पूरे नहीं होते थे। मैत्रेयी, शंकुतला, सीता, अनुसूया दमयंती तथा सावित्री आदि इसके ज्वलंत उदाहरण है। समय परिवर्तनशील है। आज समाज लड़की की बजाय लड़के को अधिक महत्व देता हे। पुरुष नारी का संरक्षक स्वयं को मानता है, भारत में ही नहीं अपितु विश्व के विकसित देशों में भी नारी की यही स्थिति है। उन्हें उचित सम्मान नहीं मिलता। विकसित देशों में नारी घर से

बाहर निकलती है। बाहर निकलने का परिणाम यह है कि उसे पुरुषो के अहम् से पग पग पर जूझना पड़ता है। गाँवों में स्त्रियों को पिता, पति अथवा पुत्र के अधीन रहना पड़ता है। ग्रामीण स्त्रियाँ प्रायः तंगी का शिकार होती हैं। उनके स्वास्थ्य और शिक्षा पर भी अधिक ध्यान नहीं दिया जाता।

1 शास्त्रों का क्या कथन है ?

2. प्राचीन समय में नारियों को क्या कहकर संबोधित किया जाता था ?

3. प्राचीन समय की कुछ प्रसिद्ध नारियों के क्या नाम हैं ?

4. वर्तमान समय में नारी की क्या स्थिति है?

5. ग्रामीण महिलाओं की क्या स्थिति है?

4. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखेः– 2x05=10

जल ही जीवन हैं। जल और मानव–जीवन का घनिष्ठ संबंध है। जल की उपयोगिता,शीतलता और निर्मलता से सब परिचित हैं। विश्व की प्रमुख संस्कृतियों का जन्म बड़ी–बड़ी नदियों किनारे ही हुआ है। नल के नीचे नहाने और जलाशय में डुबकी लगाने में जमीन–आसमान का अंतर है। आज सर्वत्र सहस्त्रों व्यक्ति प्रतिदिन सागरों नदियों ,झीलों में तैराकी का आनंद उठाते हैं एवं शरीर को भी स्वस्थ रखते है स्वच्छ तथा शीतल जल में तैरना तन को स्फूर्ति व मन को शांति प्रदान करता है। आज तैराकी एक कला के रूप में गिनी जाने लगी है। विश्व में जो भी खेल प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं । उनमें तैराकी प्रतियोगिता अनिवार्य रूप से सम्मिलित की जाती हैं । तैराकी व्यायाम है और 'खेल तथा मनोरंजन का प्रिय साधन भी है यानी आम के आम गुठलियों के दाम । यदि आप तैरना जानते है तो नदी किनारे खड़े होकर थोडी भी प्रतीक्षा करने की जरुरत नहीं । तैरकर नदी पार कीजिए और स्वास्थ्य भी बनाइए। साथ ही कला में निपुण होकर तैराकी प्रतियोगिताओं में भाग लेकर आप विजय और ख्याति का अपार आनंद भी प्राप्त कर सकते है।

प्रश्नः–

1. विश्व की प्रमुख संस्कृतियो का जन्म कहां हुआ ?
2. तैरने से क्या होता है ?
3. तैराकी क्या है ?
4. आज सर्वत्र सहस्त्रों व्यक्ति क्यों तैरते है ?
5. तैराकी की कला में निपुण होकर हम क्या कर सकते है?

5. लघु उत्तरीय प्रश्नः– 2x05=10

निम्न में किन्ही पाँच के उत्तर देंः–

1 "तू जिन्दा है तो........." कविता क्या करने की प्रेरणा देती है ?
2 हामिद के पिता की मृत्यु कैसे हुई थी ?
3 अमीना का दिल क्यों कचोट रहा था ?
4 कर्मवीर कविता किनकी बात करती है ?
5 बालगोबिन भगत पाठ धर्म के किस मर्म का उद्घाटन करती है ?
6 बालगोबिन भगत को खेती से जो प्राप्त होता था उसका क्या करते थे ?
7 सामान्य यात्रा वृतांतों से अलग हुंडरू का जलप्रपात की क्या विशेषता है ?
8 'मोको' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है ?

1x05=05

(6) दीर्घ उत्तरीय प्रश्नः-

विक्रमशिला के द्वारपण्डितों का क्या कार्य था ?

अथवा

'मोके कहाँ ढूँढ़े बंदे मैं तो तेरे पास में' पद में मनुष्य ईश्वर को कहाँ कहाँ ढूँढ़ता है ?

समूह-ब

रक्षाबंधन

रक्षा बंधन हमारे देश का महान और पावन पर्व है। इसे हिन्दू लोग बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाते है, यह पर्व प्रत्येक वर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा को सारे देश में बडें हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस पर्व को सारे राष्ट्र में अनेक नामों से पुकारा जाता है। अधिकतर यह "श्रावणी", 'राखी' आदि नामो से जाना जाता है। भाई बहन के पवित्र स्नेह का प्रतीक यह त्योहार अपने आप में एक महान पर्व है। इस दिन सभी बहनें अपने भाइयों को तिलक करके उनकी कलाइयों पर राखी बाँधती हैं। भाई भी अपनी बहनों को राखी बाँधने के बदले में अपने सामर्थ्य के अनुसार धनराशि तथा अन्य प्रकार के उपहार देते हैं। इस दिन बहनें अपने भाइयों के दीर्घ जीवन की मंगलकामना करती हैं तथा भाई अपनी बहनों की रक्षा का वचन देते हैं। इसका एक सन्देश यह भी है कि हमें अबला, असहाय तथा निर्बलों की सहायता करनी चाहिए।

इस पर्व के अवसर पर प्रत्येक घर में अनेक प्रकार के पकवान बनाए जाते हैं। सभी बच्चें, स्त्री व पुरुष नए-नए वस्त्र धारण करते हैं। इस दिन धार्मिक लोग भी अपने यजमानों के हाथ मे राखी व धागा बाँधते हैं तथा उनकी दीर्घायु होने की प्रार्थना करते हैं और उनसे दक्षिणा प्राप्त करते है। रक्षाबंधन को कभी ब्राह्मणों का त्योहार माना जाता था। प्राचीनकाल में आमतौर पर ब्राह्मण जंगलो में रहा करते थे। वे लोक कल्याण की भावना से यज्ञ करते थे और यजमान वर्ष भर स्वस्थ रहें, इसके लिए हाथ में एक रक्षा सूत्र बांधते थे, जिसे 'रक्षाबन्धन' कहा जाता था।

इस पर्व का अपना एक ऐतिहासिक महत्व भी है। ऐसा कहा जाता है कि जब सुल्तान बहादुरशाह ने चारों ओर से चितौड़गढ़ को घेर लिया तब चितौड़ की महारानी कर्मवती ने अपनी रक्षा के लिए हुमायूँ के पास राखी भेजी थी। तब राखी के बन्धन में बंधा हुमायूँ अपने वैर-भाव को भुला कर महारानी की रक्षा के लिए दौड़ पड़ा।

इस प्रकार प्रेम ,त्याग तथा पवित्रता का संदेश देने वाला यह पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न होता है। इस पर्व पर रक्षा के धागों में बहन का प्यार और मंगल कामनाएं एकत्र करके कलाइयों में बाँधने की पवित्र प्रथा युगों-युगों से इस देश में चली आ रही है। आजकल रक्षा-बंधन का यह पर्व भी अन्य सभी पर्वो की तरह एक लकीर को पीटे जाना ही प्रतीत होता है। अर्थात् अब यह मात्र एक परम्परा का निर्वाह व एक औपचारिकता बन कर ही अधिक रह गया है। इसका वास्तविक महत्व प्रायः लुप्त सा हो गया है। फिर भी राखी के धागों में जो एक अनोखा प्यार व विश्वास छिपा रहता है, उसका मूल्य नहीं आंका जा सकता है। यह पर्व हमें एक-दूसरें की रक्षा करने की शिक्षा देता है।

स्वतंत्रता दिवस

15 अगस्त भारतवर्ष का एक राष्ट्रीय त्योहार है। 15 अगस्त 1947 का दिन भारत देश के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखा गया है। इस शुभ दिन हमारा देश सैकड़ो वर्षो की अंग्रेजी पराधीनता से स्वतंत्र हुआ था। अनेकों आत्मबलिदानी के त्याग और सैकड़ो महापुरूषों के संघर्ष एवं तपस्या से यह आजादी हमें मिली है। तभी से भारत के करोड़ों नागरिक इस त्योहार को 'स्वतंत्रता दिवस ' के रूप में बड़े हर्षाल्लास से मनाते हैं। इस दिन उन महान विभूतियों को याद किया जाता है जिन्होंने देश को स्वतंत्र कराने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। इस दिन प्रत्येक वर्ष भारतवर्ष की राजधानी दिल्ली में लालकिले की प्राचीर पर प्रधानमंत्री राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं तथा देशवासियों के नाम सन्देश देते है। राष्ट्रीय ध्वज को 21 तोपो की सलामी दी जाती है, तत्पश्चात् "जन गण मन अधिनायक जय है" राष्ट्रगान होता है।

स्वतंत्रता तथा समृद्ध का प्रतीक यह दिवस भारत के कोने-कोने में बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है। 15 अगस्त को सभी सरकारी कार्यलयों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है तथा सभी लोग अपने घरों व दुकानों पर राष्ट्रीय -ध्वज फहराते है । इस दिन रात्रि के समय सरकारी कार्यलयों व अनेक विशेष स्थानों पर विद्युत-प्रकाश किया जाता है। इसकी सुन्दरता के कारण भारत की राजधानी दिल्ली एक नववधू-सी लगने लगती है। इस दिन स्कूलों में बच्चों को फल, मिठाइयां आदि वितरित की जाती है। देश भर में नाना प्रकार के कार्यक्रम होते हैं। लेख-भाषण प्रतियोगिता, विभिन्न संगोष्ठी, कवि सम्मेलन आदि का आयोजन होता है।

स्वतंत्रता जीवन का एक महान मूल्य है। जैसे मन को शांति ,ह्रदय को प्यार-स्नेह और भूखे को अन्न चाहिए वैसे ही व्यक्ति को स्वतंत्रता चाहिए। अतएव 15 अगस्त भारत के गौरव व सौभाग्य का पर्व है यह पर्व हम सभी के ह्रदयो में नवीन स्फूर्ति ,नवीन आशा,उत्साह तथा देश -भक्ति का संचार करता है। यह स्वतंत्रता-दिवस हमें इस बात की याद दिलाता है कि इतनी कुर्बानियां देकर जो आजादी हमने प्राप्त की है , उसकी रक्षा हमें हर कीमत पर करनी है। चाहे उसके लिए हम अपने प्राणों की आहुति ही क्यों न देनी पड़े। इस दिन हम राष्ट्र की स्वतंत्रता तथा सार्वभौमिकता की रक्षा का प्रण लेते है।

विद्यार्थी और अनुसासन

अनुशासन का आजकल जिन अर्थो में इस्तेमाल किया जाता है वह अंग्रेजी के डिसिप्लिन शब्द का हिन्दी पर्याय है। अनुशासन का यदि शब्द विग्रह करें तो यह शब्द दो शब्दों का ऐसा मिश्रित रूप है,जो अपने अर्थ को बदल देता है-अनु+शासन, अर्थात् अनु का अर्थ है-पीछे, साथ, पास या समीप और शासन का अर्थ है- सरकार द्वारा की जाने वाली प्रचलित राज्य-व्यवस्था, आज्ञा ,आदेश ।इनमें से यदि हम डिसिप्लिन वाले अंग्रेजी अर्थ के अनुसार उचित शब्द छांटे, तो ज्ञात होगा कि अनुशासन उस व्यवस्था अथवा नियमों का पालन करना है, जो किसी संस्था द्वारा निर्धारित किए जाते है। संस्था सरकार भी हो सकती है, स्कूल, कॉलेज अथवा समितियां या संघ भी हो सकते है।

अतः विद्यार्थियों से यह अपेक्षा की जाती है कि उन नियमों, व्यवस्थाओं अथवा कानूनों को मानें, उनका पालन करें जिन्हें कालेज/स्कूल के प्राधिकारियों ने बनाया है अथवा सरकार द्वारा सम्यक् प्रणाली से सुनिश्चित किए गए है।

अनुशासन ,आदर्श जीवन जीने का एक रास्ता है। इस रास्ते का निर्माण विद्यार्थी-जीवन से होता है इस कालावधि में यदि अच्छी आदतें पड़ गई, लक्ष्य बोध हो गया एवं विद्यार्थी ने अपने जीवन के महत्व को पहचान लिया , तो ऐसा छात्र निश्चित ही सफलता के लक्ष्य की ओर निरंतर बढ़ता चला जाता है, क्योंकि उसको समय का सदुपयोग करना आ गया है।

अनुशासन रखना तथा अनुशासनिक वातावरण बनाए रखना विद्यार्थी का प्रथम कर्तव्य है। विद्यार्थी जीवन मनुष्य का सबसे कीमती जीवन है। इस जीवन का एक-एक क्षण बहुत उपयोगी होता है। इस क्षण का सदुपयोग वही विद्यार्थी ठीक से कर पाता है, जो अनुशासन में रहता है। परिवार में माता-पिता तथा अन्य गुरुजनों की आज्ञा मानना, अनुशासन का पहला सोपान है । कॉलेज , स्कूल में गुरुजन/अध्यापक गणों का कहना मानना , पढ़ाई की ओर पूरा ध्यान देना,

घर के लिए जो काम दिया गया है उसे समय पर पूरा करके ले जाना ,और विद्यालय में जो कुछ शिक्षा दी जाती है ,उसे ध्यान से सुनना तथा याद करना विद्यार्थी के लिए नितान्त आवश्यक है। यही विद्यार्थी जीवन का अनुशासन है।

अनुशासन परिवार से ही आरंभ होता है और आगे चल कर विद्यालय और समाज मे इसका विकास होता है |यह समझना आवश्यक है कि आत्म अनुशासन ही सबसे बड़ा अनुशासन है |यदि विद्यार्थी अपने जीवन को अनुशासित कर लें तो वो न केवल अपना बल्कि देश के भविष्य को भी उज्जवल बना सकते हैं |

पंडित जवाहर लाल नेहरू

महात्मा गांधी यदि स्वतंत्र भारत के राष्ट्रपिता है तो पण्डित जवाहर लाल नेहरू को आधुनिक भारत का निर्माता माना जाता है। राजसी परिवार में जन्म लेकर तथा सभी तरह की सुख-सुविधा भरे वातावरण में पल कर भी उन्होंने राष्ट्रीय स्ववंत्रता एवं आन-बान की रक्षा के लिए अपना सर्वस्य त्याग दिया ।

पंडित जवाहर लाल नेहरू का जन्म 14 नवम्बर, 1889 ई. इलाहाबाद के आनंद भवन में हुआ था। उनके पिता पंडित मोती लाल नेहरू अपने समय के प्रमुख वकील थे। उनकी माता का नाम श्रीमती स्वरुप रानी नेहरू था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई थी। उसके बाद वे उच्च शिक्षा प्राप्त करने इंग्लैण्ड चले गए। वहाँ से बैरिस्टर बनकर सन्1912 में वापस आए और अपने पिताजी के साथ प्रयाग में ही वकालत करने लगे । सन्1915 में रोलट एक्ट के विरूद्ध होने वाली बम्बई कांग्रेस में नेहरूजी ने भाग लिया। यहीं से नेहरूजी का राजनीतिक जीवन प्रारम्भ हुआ था।

नेहरूजी का विवाह सन्1916 ई. में श्रीमती कमला के साथ हुआ । सन् 1917 में 19 नवम्बर के दिन उनके घर इन्दिरा प्रियदर्शिनी नामक पुत्री ने जन्म लिया। कुछ दिन पश्चात नेहरूजी कांग्रेस के सदस्य बन गए और फिर महात्मा गांधी के नेतृत्व में देश की सेवा के कार्य मे लग गए । सन् 1919 के किसान आन्दोलन और 1921 के असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण नेहरूजी को जेल जाना पड़ा। सन् 1931 ई. मे उनके पिता श्री मोती लाल नेहरू और सन्1936 ई. मे उनकी धर्मपत्नी कमला नेहरू का निधन हो गया।

15 अगस्त ,1947 को भारतवर्ष स्वतंत्र हो गया। तब वे सर्वसम्मति से भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने और जीवन के अन्त तक इसी पद पर बने रहे। नेहरूजी ने भारत को आर्थिक ,सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से उन्नत करने के लिए महान कार्य किए । नेहरूजी के 'पंचशील ' के सिद्धान्तों ने विश्व शांति की स्थापना में सहायता की।

पंडित जवाहर लाल नेहरू एक महान् राष्ट्रीय नेता तो थे ही, वे उच्च कोटि के चिन्तक ,विचारक और लेखक भी थें। उनकी रची 'मेरी कहानी 'भारत की खोज' विश्व इतिहास की झलक' व 'पिता के पुत्री के नाम पत्र' आदि रचनाएं विश्व प्रसिद्ध है। पंडित नेहरू बच्चों को बहुत प्यार करते थे, इसलिए बच्चे उन्हें आदर तथा प्यार से 'चाचा नेहरू ' कहकर पुकराते थे। अतः उनके जन्म को आज भी 'बाल दिवस 'के रुप मे मनाया जाता है। विश्व शांति का वह मसीहा 27 मई 1964 ई. को हमारे बीच से उठ गया। देश-विदेशों से विशेष प्रतिनिधि उनके अन्तिम दर्शनों के लिए आए। उनकी वसीयत के अनुसार उनका भस्म खेतों और गंगा नदी मे प्रवाहित कर दिया गया। उनका नाम चिरकाल तक इतिहास में अमर रहेगा।

कम्प्यूटर : आज की आवश्यकता

कम्प्यूटर इस शताब्दी के सर्वाधिक महत्वपूर्ण आविष्कारों में से एक है। आज कम्प्यूटर हिसाब-किताब एवं सोच-विचार के वे सभी कार्य करने लगा है जो कभी मानव-मस्तिष्क ही किया करता था। इसी कारण कम्प्यूटर को 'मशीनी मस्तिष्क 'कहा जाने लगा है। इसके विकास का

कार्य काफी समय से चला आ रहा है और आज भी वैज्ञानिक इससे ऐसे कार्य लेने की कोशिश में हैं,जो मानव के बूते के बाहर हैं।

कम्प्यूटर को आज प्रत्येक क्षेत्र की प्रगति एवं द्रुत विकास के लिए आवश्यक माना जाने लगा है। शिक्षा, व्यवसाय, शासन–प्रशासन सभी में आज कम्प्यूटर प्रणाली की आवश्यकता ही अनुभव नहीं की जा रही है, बल्कि उसे यथासम्भव अपनाया भी जा रहा है। मानव–मस्तिष्क से भी बढ़कर तीव्रगति से कार्य करने वाला कम्प्यूटर वास्तव में अंक–गणित पद्धति के विकास की एक महत्वपूर्ण आधुनिक देन है।

आज अमेरिका ,रूस , फ्रांस ,जर्मनी,हालैंड,स्वीडन,ब्रिटेन आदि देशों में इसे मानव–मस्तिष्क का दर्जा मिल चुका है। भारत में कम्प्यूटर विज्ञान का तीव्रता से विकास हो रहा है। तथा हर क्षेत्र में उसकी सहायता लेकर कार्यक्षमता को बढ़ाया जा रहा है। हमारे देश में सबसे पहला कम्प्यूटर सन् 19[illegible] ई. में आया था। तब से आज तक दुसरे देशों से बहुत –से कम्प्यूटर हमारे देश में आ चुके है। अब तो कम्प्यूटर यहाँ भी बनाए जाने लगे हैं।

आज सरकारी –गैर सरकारी प्रत्येक क्षेत्र में बड़े व्यापक स्तर पर कम्प्यूटर का प्रयोग किया जाने लगा है। इसका प्रयोग कारखानों में कल–पुर्जे बनाने, डाक छाँटने, रेल मार्ग संचालन करने, टिकट बाँटने,शिक्षा ,मौसम की जानकारी ,वैज्ञानिक अनुसंधान, अन्तरिक्ष विज्ञान ,परिवहन व्यवस्था,विमान परिवहन, व्यापार चिकित्सा, वीडियो खेल ,मुद्रण कला,लेखा–जोखा परिणति का हाल जानने आदि के लिए इसका प्रयोग होने लगा है। बिजली के बिल बनाने व भेजने में इनका उपयोग किया जा रहा है। ,बैकों में हिसाब–किताब रखने, पर्चो को जाँचने में भी इनका प्रयोग हो रहा है। इसकी सहायता से पुस्तकें महीनों के स्थान पर दिनों पर में तैयार हो जाती है। समाचार पत्रों के प्रकाशन और समूचे किया–कलापों का आधार तो कम्प्यूटर बन ही चुका है।

आज के युग में कम्प्यूटर लगभग सभी क्षेत्रों में हमारी सहायता कर रहा है। इसके इस महत्व को देखते हुए, विद्यालयों में सभी विद्यार्थियों को इसका शिक्षण दिया जा रहा है।वर्तमान में यह मानव जीवन के लिए बहुत उपयोगी है।

2.

पूज्यनीया दीदी — कंकड़बाग पटना

सादर प्रणाम! — 14.01.2017

मैं कुशलपूर्वक हूँ और आशा करता हूँ कि आप भी कुशल होंगी । नववर्ष मैनें अपने दोस्तों के साथ राजगीर में मनाया था। राजगृह एक ऐतिहासिक जगह है। वहाँ मैंने ब्रह्मकुंड में स्नान किया। दर्शनीय स्थानों वेणुवन,विश्व शांति स्तूप को देखा और शाम को पटना लौट आया। मिलने पर विस्तार से बताऊँगा। बड़ो को प्रणाम छोटों को शुभ प्यार।

आपका प्यारा भाई

आनंद

अथवा

संवाद :-

अमनः आर्यन मैनें हिन्दी का गृहकार्य नहीं किया।

तुमने किया है क्या ?

आर्यनः हाँ मैने तो किया है।

अमनः मुझे एक दिन के लिए अपनी कॉपी दोगे?

आर्यनः क्यों दूँ? नकल करने के लिए?

अमनः दे दो दोस्त ! सर बहुत डाँटेगें।

आर्यनः (मुस्कुराते हुए) अच्छा लो।

(3) 1. शास्त्रों का कथन है- यत्र नार्यरतु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता।

2. प्राचीन समय में नारियों को लक्ष्मी व गृहदेवी कहकर संबोधित किया जाता था।

3. प्राचीन समय की कुछ प्रसिद्ध नारियाँ हैं- मैत्रेयी, शकुंतला, सीता, दमयंती, सावित्री आदि।

4. वर्तमान समाज लड़की की बजाय लड़के को अधिक महत्व देता है। पुरुष स्वयं को नारी का संरक्षक मानता है।

5. ग्रामीण स्त्रियों को पिता पति अथवा पुत्र के अधीन रहना पड़ता है उनके स्वास्थय और शिक्षा पर भी अधिक ध्यान नहीं दिया जाता है।

(4) 1. विश्व की प्रमुख संस्कृतियों का जन्म बड़ी-बड़ी नदियों के किनारे हुआ है।

2. तैरना तन को स्फूर्ति व मन को शांति प्रदान करता है।

3. तैराकी एक कला एवं व्यायाम है। यह खेल तथा मनोरंजन का प्रिय साधन भी है।

4. सर्वत्र सहस्त्रों व्यक्ति तैराकी का आनंद उठाकर अपना मनोरंजन करते है एवं शरीर को स्वस्थ भी रखते है।

5. तैराकी कला में निपुण होकर हम तैराकी प्रतियोगिताओं में भाग लेकर विजय और ख्याति का अपार आनंद भी प्राप्त कर सकते है।

(5) 1. "तू जिन्दा है" तो कविता इस जीवन राग में अतीत के दुखदायी पलों को भूलकर आशा और जीत की नई दुनिया का स्वागत करने की प्रेरणा देता है।

2. हामिद के पिता की मृत्यु हैजे के कारण हुई थी।

3. गाँव के बच्चे अपने पिता के साथ मेला घूमने जा रहे थे। हामिद अकेला कैसे जाएगा यही सोचकर अमीना का दिल कचोट रहा था।

4. कर्मवीर कविता बाधाओं से जूझते हुए उन कर्मशील लोगों की बात करती है जो सभ्यता संस्कृति का निर्माण करते हैं।

5. बालगोबिन भगत पाठ धर्म के इस मर्म का उद्घाटन करती है कि धर्म पालन आडम्बरों या अनुष्ठानों के निर्वहण में नहीं बल्कि आचरण की पवित्रता और शुद्धता में है।

6. बालगोबिन भगत को खेती से जो प्राप्त होता उसे सिर पर रखकर साहब के दरबार में भेट रूप से ले जाते और प्रसाद रूप में जो उन्हें मिलता उसे घर लाते थे।

7. सामान्य यात्रा वृतातों से अलग हुंडरू का जल प्रपात आदिवासी संस्कृति की विशिष्टता को उभारने वाला यात्रा वृतांत है।

8. "मोको" शब्द का प्रयोग ईश्वर और अल्लाह के लिए किया गया है।

(6) विक्रमशिला के द्वारपंण्डित ज्ञान की विभिन्न शाखाओं जैसे तंत्र योग, न्याय व्याकरण आदि में पारंगत होते थे। इनके समक्ष मौखिक परीक्षा में उतीर्ण होने वाले छात्रों को ही विश्वविद्यालय के प्रांगण में प्रवेश मिलता था। अतः ये द्वारपण्डित विश्वविद्यालय के आधार स्तंभ थे।

अथवा

प्रस्तुत पद कबीरदास द्वारा रचित है इसमें कवि कहते है कि ईश्वर या अल्लाह को व्यक्ति प्रायः मंदिर, मस्जिद, काबा तथा कैलाश पर्वत जैसे तीर्थ पर पूजा–पाठ योग साधना एवं वैराग्य आदि में खोजते फिरते है।

SET - 3

1	घ	[illegible]	[illegible]
2	ख	31	क
3	ख	32	ख
4	ख	33	ग
5	घ	34	क
6	ख	35	क
7	ग	36	ग
8	ख	37	ख
9	क	38	ग
10	ग	39	ग
11	ग	40	ग
12	ग	41	ग
13	ख	42	ग
14	ग	43	ग
15	क	44	ग
16	ख	45	क
17	क	46	क
18	घ	47	क
19	ख	48	क
20	क	49	ख
21	क	50	क
22	ग		
23	घ		
24	क		
25	ख		
26	ख		
27	घ		
28	ग		
29	घ		
30	क		